जैविक खेती – एक मधुर परिकल्पना

पवन टाक, फसल निरीक्षक, आई.एच.आई.टी.सी.

पृथ्वी, मानव व पर्यावरण के बीच मधुर, परस्पर लाभदायी तथा दीर्घायु संबंधों की अवधारणा को आधार बनाकर आज की जैविक खेती की परिकल्पना की गई। समय के बदलते स्वरूप के साथ जैविक खेती का सपना अपने प्रारंभिक काल के मुकाबले अब जल्द ही सच होने वाला है। क्योंकि वर्तमान समय की खेती में रसायनों का अन्धाधुन प्रयोग किया जा रहा है। जिसका प्रभाव प्रकृति के प्रत्येक जिवित व अजिवित घटक पर पड रहा है, रसायनों के अधिक उपयोग से अनेक समस्याओं का श्री गणेश होता है। प्रर्यावरण प्रदुषण, भूमि प्रदुषण, सूक्ष्म जीवों के विनाश के साथ प्राकृतिक स्त्रोतों का भी विनाश होना, खाद्यान में जहर की अधिक मात्रा आदि समस्याऐं इन्ही रसायनों के अधिक प्रयोग से निर्मित हुई है और अब इन समस्याओं से बचने का एक मात्र विकल्प है तो वह जैविक खेती है। क्योंकि जैविक खेती, देशी खेती का उन्नत तरीका है। जिसमें रासायनिक खाद, कीटनाशकों, वृद्वि नियन्त्रकों का उपयोग नही करके खेत में गोबर की खाद, कम्पोस्ट, वर्मी–कम्पोस्ट, जीवाणु खाद, जीवामृत, अमृत पानी, फसल अवशेष एवं प्रकृति में उपलब्ध मित्र कीटो, जीवाणुओं एवं जैविक कीट नियंत्रक द्वारा हानिकारक कीटों एवं बीमारियों से बचाते हुए फसल का उत्पादन किया जाता है। जिसके द्वारा आने वाली पीढी को रसायन मुक्त खाद्यान की व्यवस्था हो सकेगी।

प्रिय साथियों इसी सपने को साकार करने के लिए संस्थान पर जैविक खेती के कुछ प्रयोग प्रारम्भ किये जिसके संक्षिप्त उदाहरण आपके सामने प्रस्तुत है। संस्थान के संरक्षित क्षेत्र में 560 वर्ग मीटर के क्षेत्र को ज्येष्ठ व आषाढ (जून व जुलाई) में कुछ समय के लिए खाली रखा। तत्पश्चात संरक्षित खेती की तकनिकी विधियों का समायोजन करते हुए खीरा की जैविक खेती प्रारम्भ की, इस संरक्षित क्षेत्र में हमने खीरा के पोषण मांग के अनुसार वर्मी कम्पोस्ट का प्रयोग किया। बीज अंकुरण के कुछ समय पश्चात (8 से 10 दिन बाद) नीम अर्क के द्वारा उपचारित किया। उक्त क्षेत्र को प्रत्येक 15 दिन में जीवामृत के द्वारा उपचारित किया जा रहा है। साथ ही विभिन्न कीट व व्याधियों से बचने हेतु उन्नत एवं पारम्परिक तरीकों का समावेश करते हुए जैव कीट नियंत्रकों का प्रयोग कर रहे है। जैसे गौमूत्र एवं नीम आधारित अर्क, लहसून का अर्क, मिर्च व ग्वारपाठा का अर्क, छाछ का घोल, दूध व हल्दी का घोल आदि उक्त क्षेत्र में पोषक तत्वों की पूर्ति हेतु वर्मी वाश आदि जैविक आदानों का प्रयोग कर रहे है। उक्त प्रयोग के आधार पर हमने पाया है कि संरक्षित क्षेत्र में भी जैविक अर्थात खेत पर उपलब्ध आदानों का समन्वित प्रयोग करते हुए रसायन मुक्त खेती कर सकते है। इसी प्रकार संस्थान के ऑपन फिल्ड में भी जैविक खेती के उक्त प्रयोग अपनाये गये है। जिसमें बैंगन, भिण्डी, ग्वार फली, टमाटर, मक्का, गोभी, मिर्च, पालक, लोकी आदि सब्जियों का रसायन मुक्त उत्पादन किया जा रहा है। साथ ही संस्थान में फूलों एवं फलों के उत्पादन में भी रसायन के बिना अर्थात जैविक आदानों का समायोजन से रसायन मुक्त उत्पादन किया जा सकेगा। यदि प्रत्येक किसान भाई इस प्रकार से जैविक खेती की परिकल्पना को अपने खेत पर अपनाये तो आने वाले समय में स्वस्थ भारत का सपना जल्द ही साकार होगा।

इसी आशा और विश्वास के साथ धन्यवाद!